खण्ड – 'ब'

– सिन्धुसभ्यता के मूर्तिशिल्प

– मौर्य, शुंग, कुषाण एवं गुप्तकालीन मूर्तिशिल्प

– मध्यकालीन कला एवं स्थापत्य

– राजस्थान की मूर्तिकला

– समकालीन भारतीय मूर्तिकला

अध्याय – 5
सिन्धु सभ्यता के मूर्ति शिल्प

भारत में सिन्धुकाल से ही मूर्ति के प्रामाणिक अस्तित्व मिलते हैं, किन्तु कल्पना की जाती है कि मूर्ति का उद्भव उत्तर पाषाण काल से प्रारंभ हो गया था। जहाँ चित्र द्विआयामी हैं और कभी–कभी गढ़नशीलता के कारण त्रिआयामी भ्रम आभासित होता है, वहीं दूसरी ओर मूर्ति पूर्णतः त्रिआयामी सृजन है जिसकी लम्बाई व चौड़ाई के साथ–साथ मोटाई होती है, गहराई होती और यह अन्तराल (Space) में स्थान घेरती है।

मूर्ति त्रिआयामी होने के कारण किसी ठोस (पदार्थ) से बनाई जाती है, जिसमें सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा, पीतल, अष्टधातु सभी प्राकृतिक एवं कृत्रिम धातु, रत्न, उपरत्न, काँच, कड़े व मुलायम पत्थर, मसाले, मिट्टी, मोम, लाख, गन्धक, हाथी दाँत, लकड़ी, कागज की लुगदी, कोई भी ठोस रूप लेने वाला पदार्थ आदि उपादानों को उनकी प्रकृति के अनुसार गढ़कर, खोदकर, उभारकर, कोरकर, पीटकर, ढालकर इच्छित त्रिआयामी रूप देकर मूर्ति का निर्माण किया जाता है।

सिन्धुकाल के बाद मौर्यकाल से यह भी कहा जा सकता है कि बुद्ध के आविर्भाव से ही एक समृद्ध मूर्तिकाल का सिलसिला भारत में चला। इन दो हजार पाँच सौ वर्षों में हर युग की रुचि और रीति के कारण मूर्ति शैली में कई परिवर्तन हुए। रीति और शैली के इस परिवर्तन ने ही कला इतिहास को जन्म दिया, जिसमें विषय वस्तु तक रुचि रखना महत्त्वपूर्ण है। मूर्ति में महत्त्व ''सौन्दर्य और आकर्षण'' का है। रुचि में आने वाले परिवर्तन और शैली के विकास का है क्योंकि हर पीढ़ी का कलाकार कलाकृतियों के माध्यम से सौन्दर्य की अपनी रुचि को जिसे वह सुन्दर समझता है, उसको और अपने पूर्वजों के सौन्दर्य सम्बन्धी आदर्शों को बदलने की प्रक्रिया को अभिव्यक्ति देता है। इसी प्रकार भारतीय कला भी सदियों से एक जैसी नहीं रही है। इस पर समय–समय में कई भारतीय व पाश्चात्य प्रभाव पड़े और भारतीय मूर्ति शिल्प में परिवर्तन लाकर क्रमिक रूप में विभिन्न शैलियों ने अपना इतिहास बनाया। यह शैली हर युग में भिन्न होती है और निरन्तर बदलती रहती है। मूर्तिकला का यह अध्ययन मूर्तिकला के इतिहास की शैलियों के सम्बन्ध में है।

सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो)

सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से है। ईसा पूर्व 2700 वर्ष से 1700 वर्ष पूर्व सिन्धु घाटी में एक अत्यन्त उन्नत व समृद्ध सभ्यता का विकास हुआ। सिन्धु नदी की घाटी में होने से इसे सिन्धु घाटी सभ्यता कहते हैं। यहाँ पर खुदाई में दो महत्वपर्णू नगर प्राप्त हुए हैं जिन्हें मोहनजोदड़ो हड़प्पा के नाम से जाना जाता है। यहाँ खुदाई से पता चलता है कि यह सभ्यता बहुत विकसित थी। भवन निर्माण में पकाई गई ईंटों को काम में लिया गया है। चौड़े रास्ते, पक्की नालियाँ, स्नानागार, मकानों के दरवाजे गलियों में खुलते थे। पक्की ईटों के फर्श, सार्वजनिक जलाशय राजप्रासाद, धान्यागार तथा सार्वजनिक भवन मिले हैं। यहाँ पर प्राप्त सामग्री व नगर विन्यास को देखकर नेहरूजी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दुस्तान की कहानी' में लिखा है – 'यह एक दिलचस्प बात है कि हिन्दुस्तान की

कहानी के इस ऊषा काल में हम उसे एक नन्हे बच्चे के रूप में नहीं देखते हैं, बल्कि इस वक्त भी वह अनेक प्रकार से सयाना हो चुका था। वह जिन्दगी के तरीकों से अनजान नहीं है, वह किसी धुंधली और न हासिल होने वाली दूसरी दुनिया के सपनों में खोया हुआ नहीं है, बल्कि उसने जिन्दगी की कला में, रहन–सहन के साधनों में काफी तरक्की कर ली है, और न महज सुंदर चीजों की रचना की है बल्कि आज की सभ्यता के उपयोगों और खास चिन्हों – अच्छे हमामों और नालियों को भी तैयार किया है। काली बंगा, रोपड़, लोथल नगरों में प्राप्त सामग्री को देखकर पता चलता है कि यहां की आबादी कृषि कार्य व व्यापारिक धन्धों में लगी थी। और इनका व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं तक फैला हुआ था।

मोहन जोदड़ो में खुदाई के दौरान प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि यहाँ पर समाधियाँ, तालाब तथा स्नानागार, प्राप्त हुए हैं। चौड़ी सड़कों पर दोनों ओर पानी निकास के लिए नालियाँ तथा प्रकाश स्तम्भ भी लगे हुए थे। इन सबको देखकर पता चलता है कि मोहनजोदड़ो नगर एक समृद्ध व व्यापारिक केन्द्र था। यहाँ की जमीन उपजाऊ होने के कारण कृषि कार्य भी उच्च स्तर का होता था, यही कारण था कि यह नगर समृद्ध था। यहाँ पर प्राप्त सामग्री में सूती कपड़ों के टुकड़े, करघे, आभूषण जैसे – हार, अंगूठियाँ, छल्ले, पेटियाँ, कुण्डल तथा कड़े प्राप्त हुए हैं। प्राप्त आभूषण सोने, चाँदी, हाथी दाँत, हड्डी, काँसे, ताँबे तथा पक्की मिट्टी के बने हुए हैं। इनके अतिरिक्त युद्ध के हथियारों में तीर कमान, भाले, कुल्हाड़ी, छेनियाँ, उस्तरे आदि काँसे या ताँबे के प्राप्त हुए हैं।

कुकुदयुक्त बैल की मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मोहर

मोहर पर हस्ति आकृति

मोहरें – मोहनजोदड़ो व हड़प्पा में प्राप्त मोंहरें कई प्रकार की हैं। इसका कारण इस सभ्यता का कई चरणों से गुजरना है। प्राप्त मोहरों को मिट्टी से पकाकर तैयार किया गया है। ये मोंहरे कई आकारों में मिली हैं जैसे गोल या बेलनाकार या चौकोर आदि। प्राप्त मोहरों पर भैंसे, मेंढ़े, गैण्डा, वृषभ, सूअर आदि आकृतियाँ उभारकर बनाई गयी हैं। मोहरों पर एक से तीन रेखाओं में लिपि भी अंकित है। इन मोहरों के आकार भी कई हैं। पौन इँच से सवा इँच वर्गाकार में है। चित्र के अवशेष केवल मृत्तिका पात्रों पर ही मिलते हैं। मोहनजोदड़ो व हडप्पा में मोहरों के अतिरिक्त कलात्मक सामग्री मिली है उनमें पके हुए मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं, जो विभिन्न आकारों के हैं। इन बर्तनों पर काले तथा गेरू से रंग किया जाता था तथा कई ज्यामितीय आकार भी बनाए जाते थे। बर्तनों को चाक पर बनाकर पकाया जाता था तथा इन पर पॉलिश का काम भी होता था। इन बर्तनों के अलावा यहाँ प्राप्त पक्की मिट्टी के खिलौने प्राप्त हुए हैं जो मानव की कला अभिरुचि के परिचायक हैं। इन खिलौनों में झुन्झुने, सीटियाँ, पुरुष तथा स्त्री आकृतियाँ, पहिये वाली गाड़ी, चिड़िया व मनके मिले हैं जिन्हें वह अपने आपको सजाने के रूप में काम लेता था।

मूर्तियाँ — मोहनजोदडो में कई प्रकार की मूर्तियाँ मिली हैं जिनमें मिट्टी, काँसे, ताँबे, पीतल व पत्थर की मूर्तियाँ हैं। प्राप्त मूर्तियों में पशु–पक्षियों के अलावा मानवाकृतियाँ भी मिली हैं जिन्हें देव रूप में माना गया। प्राप्त मूर्तियों में पृथ्वी देवी, काली देवी, काँसे की नग्न नर्तकी, दो मानव धड़, पद्मासन लगाए योगी की मूर्ति व मोहरों पर नन्दी की मूर्ति से प्रकट होता है कि ये लोग शैव धर्म को मानते थे।

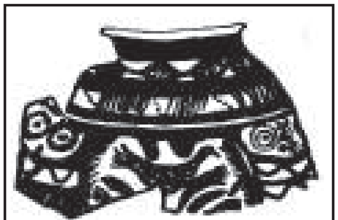

मृद् पात्रा पर चित्रित अलंकरण

मृद् पात्रों पर चित्रित

मोहन जोदड़ो की काँसे की नग्न नर्तकी उन्नत ढलाई का नमूना है। इसके अलावा दो धड़ मिले हैं जिनमें एक पुरुष धड़ की ऊँचाई 7′′ है जिनमें दुशाला अलंकृत पत्तियों से बनाया गया है। चेहरे पर दाढी व मूंछें भी बनाई गई हैं। दूसरा धड़ नर्तकी का है जो आनुपातिक नहीं है। इसकी ऊँचाई 4 ¼ ′′ है जो पीतल से ढालकर बनाई गई है। हाथ पैर धड़ से अधिक लम्बे बनाए गये हैं। इसका एक हाथ कूल्हे पर तथा दूसरे हाथ से ताल दे रही है। बाँये हाथ में नीचे से ऊपर तक कड़े पहने हुए है। यह भी उस समय की उत्तम ढलाई का नमूना है। इसके अलावा एक योगी की मूर्ति मिली है जो कि ध्यानावस्थित है तथा पद्मासन लगाए हुए है।

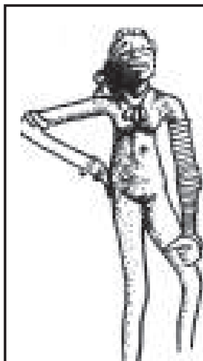

मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर्तकी की कांस्य मूर्ति

हडप्पा की खुदाई में जो मूर्तियाँ मिली हैं उनमें दो धड़ प्राप्त हुए हैं, जिनमें एक लाल बालू पत्थर से तथा दूसरा सलेटी पत्थर में निर्मित है, जोकि रचना व सौन्दर्य की दृष्टि से बेजोड़ है। शारीरिक रचना संतुलित एवं वास्तविक है। पेट हल्की गोलाई लिए हुए है। दूसरा धड़ जो सलेटी पत्थर से बना है किसी नर्तक का मालूम पड़ता है ऐसा उसकी हाथ–पैर की मुद्राओं से महसूस होता है। यह शिल्प खड़ी मुद्रा में है और उसका बायाँ पैर ऊपर की ओर ऊँचा उठा हुआ है व शरीर आगे की ओर झुका हुआ है। यह शिल्प भी प्रथम शिल्प की भाँति निर्मित है, लेकिन इसमें हाथ पैर भी बनाए गए हैं।

मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक पुजारी की प्रतिमा

उपरोक्त कला सामग्री से पता चलता है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता एक पूर्ण विकसित सभ्यता थी, और उस समय के मानव ने धातुओं को गलाना व ढालना अच्छी तरह से सीख लिया था। मुद्राओं का चलन भी उस समय हो गया था जिससे पता चलता है कि उस समय के व्यक्तियों का व्यापार देश में ही नहीं अपितु अन्य देशों से होता था इसके प्रमाण प्राप्त मोहरें हैं। मिट्टी के बर्तन आज के टेरा कोटा के लिए भी आदर्श प्रस्तुत करते हैं। भवन विन्यास से भी उस समय की वास्तु की जानकारी मिलती है तथा वहाँ के लोगों की जीवन शैली का परिचय आज भी ये अवशेष बता रहे हैं।

अभ्यासनार्थ प्रश्न

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. मोहन जोदड़ो व हड़प्पा कहाँ पर हैं?
2. काँसे की नर्तकी कहाँ पर प्राप्त हुई?
3. दुशाला ओढ़े योगी की मूर्ति किस खुदाई में प्राप्त हुई।
4. मृण पात्रों की सभ्यता को दूसरे नाम से जाना जाता है। वह क्या है ?
5. मोहन जोदड़ो में प्राप्त मूर्तियों के नाम लिखिए।
6. मोहन जोदड़ो व हड़प्पा में प्राप्त मोहरों के प्रकार बताइये।

निबंन्धात्मक प्रश्न

1. मोहन जोदड़ो व हड़प्पा में प्राप्त कलात्मक सामग्री पर एक निबन्ध लिखिए।